।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565-224600,224900

ई-मेल : jstsdgh01565@gmail.com

कंचन-कामिनी का त्यागी ही सच्चा साधु - युवाचार्य महाश्रमण

श्रीडूँगरगढ़ 14 जनवरी : लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, मान-अपमान, निंदा-प्र-ांसा मे संग रहना साधु का लक्षण है। साधु को मोहमाया से मुक्त रहना चाहिए। जो कंचन और कामिनी का त्यागी होता है वह सच्चा साधु होता है।

उक्त विचार युवाचार्य महाश्रमण ने तेरापंथ भवन के प्रज्ञासमवसरण ें गीता एवं उत्तराध्ययन पर तुलनात्मक विवेचन कराते हुए व्यक्त किये। उन्होनें गीत लहर में भी जनता में गीता और उत्तराध्ययन के इस विवेचन को सुनने की तीव्र लालसा का उल्लेख किया।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि गीता के बारहवें अध्याय में श्रीृण ने सात कसौटियां बताई है और कहा है जो इन पर खरा उतरता है वह मुझे प्रिय होता है। उन कसौटियों में जो सभी प्राणीयों के प्रति अद्वैत भाव रखता है, जो व्यक्ति मैत्रीपूर्ण व्यवहार करता है, जो करुणा का भाव रखता है, जो ममता के बंधन से और अहंकार से रहित रहता है, जो दुःख और सुख में सम रहने वाला है और क्षमावान है वह श्रेश्ठ होता है। युवाचार्यवर ने जैन द-र्न के सूत्रों का उल्लेख करते हुए कहा कि पर्युशण महापर्व, संवत्सरी महापर्व जैनों का अतिविि-िश्ठ पर्व है। उस दिन से सबके साथ मेरी मैत्री हो। किसी के साथ वैर न हो इस तरह के भाव रखने का संकल्प लिया जाता है। और पूर्व ेत व्यवहार के लिए सभी प्राणियों से खमत-खामणा किया जाता है। उन्होनें कहा कि महत्पूर्ण सूत्र मात्र हमारे वचन के ही विशय न बने बल्कि उन्हें जीवन व्यवहार में उतारना चाहिए। उन्होनें दे-ा के कर्णधार बालपीढ़ी एवं विकास का स्वप्न देखने वाली युवापीढ़ी को संदे-ा दिलाते हुए कहा कि माता-पिता या गुरुजन अगर गलती नहीं बतायेंगे तो उसका परिश्कार कैसे संभव होगा। जो बड़ों का उलाहना भी हमारे हित के लिए है ऐसे चिंतन के साथ सह लेता है वह सफल हो सकता है। जिस व्यक्ति में अनुकम्पा का भाव होता है, दया का भाव होता है वह सबका हित साध सकता है।

20 से प्रारंभ होगा तेरापंथ का महाकुंभ

वि-व में एक मात्र तेरापंथ मानता है-मर्यादा का महोत्सव तेरापंथ का महाकुंभ कहा जाने वाला मर्यादा महोत्सव 20 जनवरी 2010 को दोपहर 12.15 बजे पर :यामा प्रसाद मुखर्जी के ताल में वि-ाल मर्यादा समवसरण में आचार्य मह्मपज्ञ के उद्घोशणा के साथ :ुभारंभ होगा। 20 से 22 जनवरी तक चलने वाले इस महोत्सव के प्रथम दिन आचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा 250 वर्श पूर्व आचार्य भिक्षु स्वामी के द्वारा लिखित मर्यादा पत्र की स्थापना की जायेगी। इस मर्यादा पत्र के आधार पर चतुर्थ आचार्य जयाचार्य ने 145 वर्श पूर्व बालोतरा में मर्यादा महोत्सव का प्रारंभ किया था। श्रीडूँगरगढ़ के इस 146वें मर्यादा महोत्सव में आचार्य महाप्रज्ञ बसंत पंचमी के दिन तेरापंथ के वृद्ध साध्वियों, मुनियों के सेवा केन्द्रों में एक वर्श के लिए सेवा हेतु साधु-साध्वियों की नियुक्तियां करेंगे। इस दृ-य को देखने वालों का मानना है कि सेवा के क्षेत्र में मदर टेरेसा का मानना है कि

सेवा के क्षेत्र में मदर टेरेसा का नाम सबको मुख्य पर है परन्तु तेरापंथ में 5 सौ मदर टेरेसाएं है जो निर्लाब भाव से सेवा करती है। आचार्य प्रवर के एक इंगित पर अपना सर्वस्थ न्योछावर कर देती है। इस दिन युवाचार्य महाश्रमण, साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा, मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा के सेवा पर प्रेरणादायि वक्तव्य होते हैं।

मुनि जयंत ने बताया कि तेरापंथ धर्मसंघ ही वि-व का ऐसा धर्म संघ है जहां मर्यादाओं का यहां महोत्सव मनाया जाता है। इस महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए सैकड़ों-सैकड़ों साधु-साध्वियां एवं समणियां श्रीडूँगरगढ़ पहुंच चुके है और पहुंच रहे है। उन्होनें मर्यादा महोत्सव के इतिहासिक तथ्यों की जानकारी देते हुए बताया कि श्रीडूँगरगढ़ में सर्वप्रथम मर्यादा महोत्सव का आयोजन तेरापंथ के अश्ठमाचार्य कालुगणी के सान्निध्य में विक्रम संवत् 1989 में किया था। 146वां मर्यादा महोत्सव आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में कस्बे में आयोजित होने वाला प्रथम महोत्सव है और संपूर्ण रूप से श्रीडूँगरगढ़ का चौथा मर्यादा महोत्सव होगा। उन्होनें बताया कि बीकानेर जिले में मनाया जाने वाला यह महोत्सव 11वां मर्यादा महोत्सव होगा। मुनि जयंत ने बताया ि कइस मर्यादा महोत्सव के दूसरें दिन आचार्य महाप्रज्ञ का वां पदाभिशेक समारोह आयोजित होगा। जिसमें अभिन्दन किया जायेगा। साधु-साध्वियों की नयनाभिराम प्रस्तुतियां होगी। इस दि नही आचार्य महाप्रज्ञ स्वयं के जीवन रहस्यों पर प्रका-ा डालेंगे। महोत्सव के अंतिम दिन विराट हाजरी का क्रम से पंक्ति में खड़े होते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा इनको मर्यादाओं का सस्वर पुनर्रोच्चारण कराया जाता है। इसी दिन आचार्य महाप्रज्ञ, साधु-साध्वियों, समण-समणियों के आगामी चातुर्मास स्थलों की घोशणा करते हैं, जिसे सहब्र विनम्रता के साथ ि-श्य-ि-श्याओं के द्वारा स्वीकार किया जाता है। इस तरह का अनु-ासन सबके आकर्शण का केन्द्र होता है। इसी दिन आचार्य महाप्रज्ञ स्वयं द्वारा मर्यादा महोत्सव हेतु वि-ेश तौर पर निर्मित गीत का संगान भी करवाते हैं।